The Sameeksha Global: A Multidisciplinary Journal in Hindi
Vol. 4, Issue 1 – 2020
ISSN: 2581-401X

विशिष्ट सांस्कृतिक रीति-रिवाजों की अद्भुत परम्परा 'चित्रगुप्त पूजन'

राजेश कुमार सिन्हा[1]

[1]शोध-छात्र (इतिहास), शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय उज्जैन (म0प्र0)

प्रस्तावना

भारत बहु सांस्कृतिक समाज का प्रतिनिधित्व करने वाला देश है। भारत की संस्कृति बहुआयामी है। भारत में हर प्रदेश की अपनी सांस्कृतिक परंपरा और लोकाचार है जो भारत को एक अद्वितीय और परंपरानिष्ठ देश का दर्जा प्रदान करते है। व्यापक रूप में इसका मूल्यांकण करने पर इसके परिधि के अंतर्गत जीवन के विविध पक्षों का समिश्रण मिलता है। संस्कृति के अंतर्गत ज्ञान, संस्कार, आचार विचार, साहित्य, समाजिक-धार्मिक प्रथाए, कानूनी परंपराए, समाजिक जीवन के आदर्श, नीति, दर्शन और आध्यात्मिकता का समावेश मिलता है। संस्कृति मानविय क्रियाकलापों का सम्मिलित परिणाम होता है पर यह भी उतना ही सच है कि संस्कृति मानविय गुणों को निर्मित करने में मानव की सहायता करती है। संस्कृति एक सृजनात्मक उर्जा है। संस्कृति एक साकारात्मक दृष्टिकोण है और संस्कृति मनुष्य के संम्पूर्ण व्यवहार का प्रतिमान है। इतिहासकार के लिए संस्कृति किसी देश का कला और बौद्धिक विकास है, दार्शनिक के लिए संस्कृति जीवन का प्रकाश और सौंदर्य है, धार्मिक दृष्टिकोण से संस्कृति मनुष्य के संसारिक और आध्यात्मिक क्रियाकलापों का संगम है और समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से संस्कृति सिखे हुए व्यवहार की वह समग्रता है, जिसमे मनूष्य का व्यक्तित्व पलता और पनपता है।

विषय वस्तु

संस्कृति किसी भी देश, जाति और समुदाय की आत्मा होती है। संस्कृति से ही देश, जाति या समुदाय के उन समस्त संस्कारों का बोध होता है जिसके साथ वह अपने आदर्शों, जीवन मूल्यों आदि का निर्धारण करता है। संस्कृति का साधारण अर्थ होता है-संस्कार, सुधार, परिष्कार, शुद्धि और सजावट आदि। गांधी जी के शब्दों में संस्कृति अंतराआत्मा से जुड़ा हुआ एहसास है; वे कहते है-"A Nation's culture resides in the hearts and soul of its people." संस्कृति की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए, Marcus Garvey (Jamaican Publisher) ने बहुत ही

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.

The Sameeksha Global: A Multidisciplinary Journal in Hindi
Vol. 4, Issue 1 – 2020
ISSN: 2581-401X

सुदंरतम व्याख्या की है- "A people without the knowledge of their past, history, origin and culture is like a tree without root." इस बदलते परिवेश में अपने अस्तित्व के साथ, अपने रीति-रिवाजों के साथ, अपने पर्व त्योहारों के साथ, अपने इतिहास के साथ और अपने परंपरा और मर्यादाओं को साथ लेकर चलना संस्कृतिक जुड़ाव का द्योतक है। भारतीय संस्कृति अपने इसी स्वभाव के कारण पाँच हजार सालों से समृद्ध और सुदृढ होती हुई पुरे विश्व को शांति और भईचारा का संदेश देती है। इसकी गणना विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में की जाती है।

संस्कृति की समाजशास्त्रीय संकल्पना बताती है-संस्कृति शब्द का प्रयोग एक विशिष्ट अर्थ में होता है। यहाँ इसका अभिप्राय मानव जाति के रहन-सहन, आचार-विचार, भावनाएं, पूजा-पाठ, विश्वास, विचारों एवं विभिन्न प्रकार की उपलब्धियों के समग्र रूप से है।

व्रानिस्ला मैलिनाव्स्की के शब्दों में-"संस्कृति एक सामाजिक विरासत है, जिसमें परम्परागत कला-कौशल, वस्तु सामग्री, यान्त्रिक कार्य-कलाप, आचार-विचार, प्रवृत्तियों तथा मूल्य समावेशित होते हैं।"

रामधारी सिंह दिनकर के अनुसार-"संस्कृति मानव जीवन में उसी प्रकार व्याप्त है जिस प्रकार फूलों में सुगंध और दूध में मक्खन। इसका निर्माण एक या दो दिन में नहीं होता, युग-युगांतर में संस्कृति निर्मित होती है।"

"संस्कृति किसी समाज में गहराई तक व्याप्त गुणों का समग्र नाम है जो उस समाज के सोचने, विचारने और कार्य करने से बना है।"[1]

भारतीय संस्कृति अपने आप में विविध पक्षों यथा भाषा, खान-पान, आचार-विचार, भेष-भूषा पर्व त्योहार, पूजा विधि, धार्मिक आस्था आदि विभिन्न पक्षों का प्रतिनिधित्व करती है। सर्वागीणता, विशालता, उदारता, प्रेम और सहिष्णुता की दृष्टि से अन्य संस्कृतियों की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। भारतीय संस्कृति का व्यक्तित्व विविधापूर्ण है और असका स्वरूप प्राकृतिक है। भारत में अनेकों त्योहार मनाए जाते है। दीपावली, होली दशहरा, महाशिवरात्री, गणेश चतुर्थी, रक्षाबंधन, कृष्णजन्माष्टमी ,करवा चौथ, रामनवमी, छठ, वसंत पंचमी, मकर संक्राति, भाईदूज, उगाकद, ओणम, पोंगल, लोहरी, कुंभ हरतालिका तीज, हनुमान जयंती, चित्रगुप्त पूजा, मुहरम, शब-ए-बारात, रमजान, ईद उल-फित्र, ईस्टर

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.

फेस्टिवल, क्रिसमस, असम में बिहू, हिमाचल में फुल्लैच, हरियाणा में सांझी इत्यादि इसके अतिरिक्त और भी अन्य त्यौहार मनाए जाते है।

मुख्य अंश

भारतीय संस्कृति की यह अनूठी विशेषता है कि हमारे पर्व-त्योहार समाज में मानविय गुणें को स्थापित कर लोगों में समता, समानता, सदभाव और प्रेम का संदेश देते है। कुछ त्योहार स्थानिय स्तर पर भी मनाए जाते है। और कुछ पर्व विशेष वर्गसमूह द्वारा मनाए जाते है। चित्रगुप्त पूजा एक खास जाति के द्वारा मनाया जाने वाला त्योहार है परंतु इसका संबंध सम्पूर्ण मानव जाति के कर्मो के सिद्धांत से जुड़ा हुआ है। प्रस्तुत शोध पत्र कायस्थ जाति की विशिष्ट सांस्कृतिक परंपरा चित्रगुप्त पूजा जिसे दवात पूजा के रूप में भी मनाया जाता है, पर आधारित है। शोध पत्र में कायस्थ जाति की उत्पत्ति उनका ऐतिहासिक सिंहावलोकन (कैथालिपि) पौराणिक मान्यता, रीति-रिवाज और परंपरा का ऐतिहासिक अध्ययन सम्मिलित है।

कायस्थ शब्द का उल्लेख पुराणों में धर्मराज (यमराज) के मंत्री के रूप में चित्रगुप्त-देव के विशेषण अथवा उपाधि के रूप में मिलता है। ''सूत्रग्रंथों में चित्रगुप्त नाम तो मिलता है किन्तु उनके विशेषण के रूप में प्रयुक्त कायस्थ शब्द का उल्लेख नहीं मिलता।''[2] ''श्रीहर्ष विरचित 'नैषधीय चरित' में कायस्थ शब्द का उल्लेख मिलता है।''[3] ''विष्णु स्मृति में कायस्थ को राजलेखक माना गया है।''[4] क्षेमेन्द्रकृत 'नर्ममाला' में कायस्थ को 'गृहकृत्याधिपति' अथवा 'गृह-महत्तम् (होम-मिनिस्टर) कहा गया है। '''उत्तरगीता' में कायस्थ को परमात्मा कहा गया है।''[5] ''विष्णुधर्मात्तर पुराण में कायस्थ चित्रगुप्त को अंतर्यामी कहा है।''[6] याज्ञवल्क्य स्मृति के टीकाकारों ने कायस्थ शब्द का निरुपण कराधिकारी, दिविर आदि के रूप में किया है।

हिन्दू धर्म की मान्यता है कि- ''कायस्थ धर्मराज श्री चित्रगुप्त जी की संतान है तथा देवता कुल में उत्पन्न होने के कारण उन्हें ब्राह्मण और क्षत्रिय दोनों धर्मा को धारण करने का अधिकार है।''[7]

मान्यताओं के अनुसार मनुष्य के पाप-पुण्य का लेखा-जोखा रखने वाले एक दिव्य देवशक्ति जो चित्तान्तःकरण में चित्रित चित्रों को पढ़ती है, उसी के अनुसार उस व्यक्ति के जीवन को

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.

नियमित करती है, अच्छे-बुरे कर्मो का फल भोग प्रदान करती है, न्याय करती है। उसी दिव्य देव शक्ति का नाम चित्रगुप्त है। चित्रगुप्त जी कायस्थों के जनक हैं। चित्रगुप्त जी की दो शादियाँ हुई और दोनों पत्नियों से कुल 12 पुत्र हुए। अतः कायस्थ की 12 शाखाएं हैं। ''वर्तमान समय में कायस्थ की समस्त शाखाएं विभिन्न व्यावसायिक-क्षेत्रों में सफलतापूर्वक अपनी उपस्थिति दर्ज करायी हुई है।''[8] 'कायस्थ जाति की कुल आबादी लगभग 10 मिलियन है और ये 237 Segments में कार्यकर रहे हैं इन्हें लाला जी, लाला और लाल आदि उपनामों से संबोधित किया जाता है। ये भारत के 40 जिलों में-उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, हिमाचल प्रदेश, आन्ध्रप्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल, त्रिपुरा, असम, दिल्ली, राजस्थान, महाराष्ट्र, पंजाब और चंडीगढ में फैले हैं। ''ये इण्डो आर्यन समूह की भाषा बोलते हैं।''[9] कायस्थों ने एक विशेष लिपि का उपयोग किया था जिसे कैथीलिपि के रूप में जाना जाता था आजकल इस लिपि का प्रयोग नाममात्र के रूप में होता है। ''मध्यकालीन भारत में इसका प्रयोग मुख्य रूप से प्रशासनिक कार्य में उत्तर पूर्व उत्तर भारत में बहुतायत रूप में होता था।''[10] 1880 के दशक में ब्रिटिश राज के दौरान इसे प्राचीन बिहार के न्यायालयों में आधिकारिक भाषा का दर्ज़ा दिया गया था। युनिकोड में (कैथी) स्थान U+11080 से U+110CF है। बिहार में स्थित खगड़िया जिले के न्यायालय में इसे वैधानिक लिपि का दर्जा दिया गया था। अतः इसे बिहारी लिपी भी कहते है।

गुप्तकाल में कायस्थ के अस्तित्व को स्वीकार किया गया है। कुमारगुप्त प्रथम तथा वुद्धगुप्त के दामोदरपुर (बंगाल) ताम्रपत्र अभिलेखों में उपरिक कुमारामात्य नगरश्रेष्ठ सार्थवाह तथा प्रथम कुलिक के साथ-साथ प्रथम कायस्थ के उल्लेख मिलते हैं जिन्हें सर्वसम्मत पदाधिकारी माना जा चुका है। ध्रुवस्वामिनी की गढ़वा से मिली एक मोहर पर भी कायस्थ का उल्लेख मिलता है। गुप्तकालीन पुस्तक 'मृच्छकटिकम्' जो श्री शूद्रक विरचित है, में भी कायस्थ पदवाची शब्द का उल्लेख है।

कायस्थों में भगवान चित्रगुप्त की पूजा का प्रचलन है। चित्रगुप्त कायस्थों के देवता हैं। पौराणिक आख्यानों के अनुसार मान्यता है कि कायस्थों के आदि पूर्वज, श्री चित्रगुप्त जी का प्रादुर्भाव, कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की द्वितीया को,पौराणिक अवनितका अथवा उज्जयिनी का अंक-पात क्षेत्र में हुआ था यहीं पर उन्होंने देव गुरू बृहस्पति तथा दांत्यौं के गुरू शुक्राचार्य से सभी शिक्षायें प्राप्त करके धर्मराज के सहायक का पदभार ग्रहण किया था। अंकपात क्षेत्र,

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.

The Sameeksha Global: A Multidisciplinary Journal in Hindi
Vol. 4, Issue 1 – 2020
ISSN: 2581-401X

जहां चित्रगुप्त जी ने तपस्या करके सर्वज्ञान प्राप्त की थी, उज्जैन से 12 किमी. उत्तर दिशा में स्थित हैं। ''वेदों और पुराणों के अनुसार चित्रगुप्त जी मनुष्यों के पाप-पुण्य का लेखा-जोखा करके न्याय करने वाले बताये गये हैं।''[11,12] इस कार्य में उनकी सहायता श्रवण व श्रवणी नामक दो सहायकों द्वारा की जाती है। ''देवताओं के लेखाकार चित्रगुप्त महाराज की विशेष पूजा भैयादूज और यमद्वितीया के दिन कायस्थ समाज के लोगों द्वारा की जाती है।''[13] इस दिन किताब, कलम, दवात और बही खातों की पूजा का विशेष महत्त्व होता है। इस दिन से नये बही खातों की शुरुआत की जाती है। चित्रगुप्त को कायस्थों का आराध्य माना जाता है। कायस्थ लोग अपने आराध्य से अपने परिवार हेतू मंगल याचना करते है। चित्रगुप्त पूजा, बल, विद्या, साहस और शौर्य की प्राप्ति का मूल आधार माना जाता हैं। यह पूजा कायस्थों द्वारा एक विशेष स्थल पर एकत्रित होकर सामूहिक रूप में मनाया जाता है। या फिर वे अपने गृह स्थान पर पूजा स्थल को साफ कर श्री चित्रगुप्त जी को स्थापित कर, कलश स्थापना कर, दीपक जलाकर, गणपति जी तथा श्री चित्रगुप्त जी की चंदन, हल्दी, रोली, अक्षत, पुष्प व धूप अर्पित कर पूजा अर्चना करते हैं। फल, मिठाई और विशेष रूप से बनाया गया पंचामृत, जो दूध, घी, कुचला अदरक, गुड़ और गंगाजल से बनाया जाता है। पान-सुपारी का भोग लगाया जाता है। इस पूजा की एक अनूठी विशेषता है कि परिवार के सभी सदस्य साथ बैठकर अपनी किताब, कलम और दवात की पूजा करते हैं। परिवार के सभी सदस्य एक सफ़ेद कागज पर एप्पन (चावल का आटा, हल्दी, घी, पानी) व रोली से स्वास्तिक बनाते हैं। उसके नीचे पाँच देवी-देवताओं के नाम लिखते हैं यथा-'श्री गणेश जी सहाय नमः, श्री चित्रगुप्त जी सहाय नमः, श्री सर्व देवता सहाय नमः। सफेद कागज के नीचे एक तरफ अपना नाम व दिनांक लिखते हैं, दूसरी तरफ अपनी आय व्यय का ब्यौरा लिखते हैं और आगामी साल हेतु आवश्यक धन के लिए निवेदन करते हैं। शायद् भारतीय बजट की परंपरा इसी पूजा से प्रेरित है ऐसा भी अनुमान लगाया जाता है। श्री चित्रगुप्त जी का ध्यान करते हुए उनका विशेष मंत्र लिखते हैं।- **"मसीभाजन संयुक्तश्चसि त्वम्! महीतले। लेखनी कटिनीहस्त चित्रगुप्त नमोस्तुते।। मस्तुभ्यं लेखकाक्षरदासकं। कायस्थजातिमासाद्य चित्रगुप्त! नमो अस्तुते।।"** श्री चित्रगुप्त जी की आरती गाते हैं। ऐसी मान्यता है कि पूजा के पश्चात् कायस्थ लोग उस विशेष दिन में कलम का प्रयोग पूजा करने के पश्चात ही करते हैं। इसके साथ एक रोचक घटना जुडी है किवदंतियो के अनुसार जब भगवान राम दशानन को मार कर अयोधया लौटे तो भगवान राम के राजतिलक के लिए सभी देवी-देवताओ को संदेश भेजने की व्यवस्था गरू

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.

वशिष्ठ अपने शिष्यो को सौंप कर राजतिलक की तैयारी में व्यस्त हो गए। राजतिलक में सभी देवी-देवता आए पर चित्रगुप्त भगवान नहीं आए। जब जांच की गई तो पता चला वशिष्ठ ऋषि के शिष्यों ने चित्रगुप्त भगवान तक संदेश पहुंचाई ही नहीं थी। क्रोधित होकर चित्रगुप्त भगवान ने यमलोक में सभी प्राणियों का लेखा-जोखा लिखने वाली कलम को किनारे रख दिया। सभी देवता राजतिलक से वापस लौटे तो पाया स्वर्ग और नर्क के सारे काम रूके है। यह तय करना कठीन हो रहा है कि कौन स्वर्ग जाएगा, कौन नर्क। भगवान राम ने गुरू वशिष्ठ के साथ चित्रगुप्त भगवान की स्तुति की, क्षमा याचना की। चित्रगुप्त ने चार पहर बाद, कलम की पुजा करने के पश्चात प्राणियों के लेखा-जोखा लिखने का कार्य प्रारभ किया तभी से ये परंपरा चली आ रही है। यमद्वितीया के दिन भगवान चित्रगुप्त का विधिवत कलम-दवात का पूजन करके ही कलम को धारण करते हैं। कहते है तभी से कायस्थ ब्राह्यणों के लिए भी पूजनीय हुए और इस घटना के पश्चात मिले वरदान के फलस्वरुप सबसे दान लेने वाले ब्राह्यणों से दान लेने का हक भी कायस्थों को ही मिला।

प्रत्येक पूजा से भिन्न यह पूजा जीविकोपार्जन से संबंधित मानी गई है और कायस्थ लोगों का मुख्य कर्म पठन-पाठन तथा विद्यार्जन कर अपनी जीविका चलाने से संबद्ध माना गया है। ''गरूड पुराण में, भगवान चित्रगुप्त को वर्णों (शब्दों) का उपयोग करने वाले पहले व्यक्ति के रुप में उल्लेख किया गया है।''[14] सामाजिक संगठन में ये न तो विशिष्ट वर्ग में स्थान पाते हैं और न हीं निम्न वर्ग के अंतर्गत आते हैं। अपनी जीविका को कलम-दवात से जोड़कर देखते हैं तथा इसकी पूजा-अर्चना करते हैं जो इस पूजा को विशिष्ट बनाता है। श्री चित्रगुप्त जी को महाशक्तिमान क्षत्रिय के नाम से भी सम्बोधित किया गया है-''चित्र इद राजा राजका इदन्यके यके सरस्वतीमनु। पर्जन्य इव ततनद धि वष्टर्या सहस्रमयुता ददत।।''[15] ऋग्वेद में इसकी चर्चा मिलती है।

निष्कर्ष

ऐसी मान्यता है कि कायस्थ जाति का संबंध सिर्फ राजकीय कार्यो में लेखा के विविध पक्षों से ही संबंधित है। पर ऐसा नहीं है, एक समय यह जाति भारत के आधे से अधिक भूभाग पर शासन करती थी। कश्मीर में दुलर्भ बर्धन कायस्थ वंश, काबुल और पंजाब में जयपाल कायस्थ वंश, गुजरात में बल्लभी कायस्थ राजवंश, दक्षिण में चालुक्य कायस्थ राजवंश उत्तर

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.

भारत में देवपाल गौड़ कायस्थ वंश मध्य भारत में सतवाहन और परिहार कायस्थ वंश। यह वंश जिसे आज बावू संस्कृति, विशेष तौर पर लिपिक के रूप में समाज में याद किया जाता है असल में यह जाति भारत में प्रेम, ज्ञान शौर्य से सराबोर होकर भारतीय संस्कृति को संबंल प्रदान करती है।

संदर्भ ग्रंथ

1. *"Meaning of cuture" Cambridge English Dictionary*, अभिगमन तिथि July 26, 2015.
2. 'बौधायन स्मृति' के पृष्ठ 455 अध्याय 5 के सूत्र 140 में 'ऊँ चित्रगुप्तम् वर्षयामि' तथा कातीयतर्पण सूत्र में 'यमांश्चैके।'
3. ऐण्डिक्वेटी जिल्द-19 पृष्ठ 59 पंक्ति 15.
4. विष्णु स्मृति अध्याय 7 गद्यांश 3.
5. उत्तरगीता प्रथम अध्याय श्लोक 27-31.
6. विष्णु धर्मौत्तर पुराण तृतीय खण्ड 51 श्लोक 13.
7. R.B.Mandal (1981) *Frontiers in Migration Analysis concept Publishing Company* page 175 ISBN 978-03-91-02471-7.
8. Arnold P. Kaminsky, Roger D. Long (2011) India today, *An Encyclopedia of life in the Republic* ABC-CL 10 page-403-404 ISBN 978-0-313-37462-3 अभिगमन तिथि 4th March 2012.
9. कायस्थ-हू-आर दे (अंग्रेजी में) पीपल्स ग्रुप्स इंडिया 2016-10-25.
10. अंशुमान पांडे 2006 *Proposal to Encode the Kaithi script in Plane.* 1 of ISO/IEC 10646.
11. राजेश्वरी शांडिल्य (1 जनवरी 2009) भारतीय पर्व एवं त्योहार प्रभात प्रकाशन पृष्ठ 92- *ISBN* 978-81-7315-617-5.
12. विनय मार्कण्डेय पुराण डायमण्ड पॉकेट बुक्स पृष्ठ 7-ISBN 978-81-288-0568-4.
13. पध्पुराण का उत्तर खण्ड- पध्पुराणम् भाग-2, चौखंबा संस्कृत सीरीज ऑफिस, वाराणसी, संस्करण-2015.
14. गरुड पुराण डायमंड पॉकेट बुक्स, ISBN 81-288-0701-3.
15. ऋग्वेद, 8/21/18 मंडल-10, बाम्बे वेंकटेश्वर प्रेस पुणे।

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.